आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2375 • उदयपुर, शुक्रवार 25 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

जी–7 देशों की मुहिम से वैक्सीन उत्पादन बढ़ाने में मिलेगी मदद

ब्रिटेन में संपन्न हुई जी–7 देशों की बैठक में जो फैसले हुए हैं, वे भारत के लिए काफी मुफीद साबित होने जा रहे हैं। खास तौर पर जिस तरह से जी–7 देशों ने दुनिया के गरीब देशों को 100 करोड़ कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराने की मुहिम शुरू करने की घोषणा की है, उसे अंजाम तक पहुंचाने में भारत को अहम भूमिका निभानी होगी। अभी सिर्फ भारत में ही इतनी बड़ी संख्या में वैक्सीन निर्माण करने की क्षमता है।

कच्चे माल की कमी होगी दूर

जी–7 की इस घोषणा से भारत में वैक्सीन निर्माण के लिए जरूरी कच्चे माल की कमी भी दूर होना तय है। सूत्रों के मुताबिक, दुनिया में जब भी बड़े पैमाने पर वैक्सीन निर्माण की बात होगी तो वह काम भारत के सहयोग के बिना पूरा नहीं होगा।

जी–7 के सदस्यों और बैठक में बुलाए गए चारों अन्य देशों को बखूबी पता है कि कोरोना महामारी के खिलाफ उनकी रणनीति भारत की हिस्सेदारी व सहयोग के बिना सफल नहीं होगी। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भारत कोरोना वैक्सीन बनाने के लिए क्वाड गठबंधन के तहत रणनीति में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। क्वाड देश (भारत, अमेरिका, आस्ट्रेलिया व जापान) अलग से सौ करोड़ वैक्सीन हिंद–प्रशांत क्षेत्र के दर्जनों देशों को उपलब्ध कराने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके तहत वैक्सीन का निर्माण भारत में ही किया जाना है। सूत्रों का कहना है कि क्वाड के तहत हो रही चर्चा महत्वपूर्ण मुकाम पर है और कुछ हतों में फैसला होने के पूरे आसार हैं।

बढ़ाई जाएगी कच्चे माल की उपलब्धता

जी–7 की घोषणा के मुताबिक, गरीब देशों को आसानी से वैक्सीन उपलब्ध कराने के लिए दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में वैक्सीन निर्माण की सुविधा स्थापित की जाएगी। इसके लिए कच्चे माल की उपलब्धता बढ़ाई जाएगी। कच्चे माल की उपलब्धता की राह में जो भी बाधाएं हैं, उन्हें दूर करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। खास तौर पर जिन देशों में वैक्सीन निर्माण की क्षमता है, लेकिन कच्चे माल की कमी के कारण नहीं बनाया जा रहा है उनकी दिक्कतें दूर करने की व्यवस्था होगी।

दूर होगी पेटेंट संबंधी दिक्कतें

जी–7 ने वैक्सीन निर्माण में पेटेंट संबंधी दिक्कतें दूर करने में भी मदद देने की बात कही है। बताने की जरूरत नहीं कि जी–7 की उक्त सभी घोषणाएं सीधे तौर पर भारत में कोरोना वैक्सीन निर्माण को बढ़ावा देंगी। असलियत में जी–7 की तरफ से जो महत्वपूर्ण घोषणाएं हुई हैं, भारत उनकी पहले से ही मांग करता रहा है।

एक साल में छठे से दूसरे नम्बर पर आया राजस्थान

स्मार्ट सिटी मिशन की रैंकिंग में इस बार राजस्थान दूसरे पायदान पर पहुंच गया है। पिछले साल छठवें नम्बर पर था। पहले पर झारखंड और तीसरे स्थान पर आन्ध्रप्रदेश रहा हैं। केन्द्र ने देश के 36 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की उक्त रैंकिंग ऑनलाइन जारी की। देश के 100 शहरों की सूची में जयपुर 36वें स्थान पर रहा है।

उदयपुर 8वें, कोटा 11वें और अजमेर 29वें स्थान पर रहा है। राज्य में 4 ही शहर स्मार्ट सिटी में शामिल हैं, जयपुर इनमें आखिरी सीढ़ी पर रहा है।

रैंकिंग के ये आधार : परियोजना का क्रियान्वयन यानी कितना काम पूरा किया और प्रोजेक्ट निर्धारित समय से चल रहा है या नहीं। निविदाधीन कार्य, प्राप्त फंड का उपयोग एवं केंद्र को समय–समय पर उपयोगिता प्रमाण पत्र उपलब्ध कराने जैसे मापदंड शामिल, रैंकिंग में सुधार, मगर काम की धीमी रतार।

इस तरह दूसरे पायदान पर आया राजस्थान –

- राज्य के 4 शहरों को अब तक कुल 1845 करोड़ रुपए प्राप्त हुए इनमें से 1563 करोड़ का काम विभिन्न परियोजनाओं में कराया।
- चारों शहरों में 405 परियोजनाओं के लिए 3965 करोड़ जारी हुए। इनमें से 448 करोड़ के 138 कार्य पूरे।
- 2772 करोड़ के 178 प्रोजेक्ट पर कार्य जारी।
- प्रक्रियाधीन 17 प्रोजेक्ट 145 करोड़ रुपए लागत के है।

सेवा–जगत्
मानवता का प्रतिक, आपका सेवा संस्थान

नारायण गरीब परिवार राशन योजना तहत् बरेली में 60 जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से 60 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किये गये। संस्थान पिछले 10 माह उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क भोजन व राशन वितरण की सेवाएं दे रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इसी क्रम में रविवार को बरेली में राशन वितरण का शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, दो किलो दाल, पांच किलो चावल, दो किलो रिफाइंड तेल, चार किलो चीनी व एक किलो नमक सहित मसाले दिये गए।

स्थानीय आश्रम प्रभारी श्रीमान कुंवर पाल सिंह जी ने बताया कि बरेली शिविर में श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान विकास जी, डॉ. विनोद जी गोयल, श्री मान सतीश जी अग्रवाल एवं मुकेश कुमार सिंह जी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

साहसिक किंतु सत्य

मध्यप्रदेश के भोपाल में रहने वालीं प्रतिभा एक किसान हैं। 41 साल की प्रतिभा पिछले 7 सालों से ऑर्गेनिक खेती करने के साथ–साथ अन्य किसानों के प्रोडक्ट को प्लेटफॉर्म दे रही हैं। भारत जैसे पुरुष प्रधान देश में प्रतिभा के लिए एक महिला किसान होना किसी चुनौती से कम नहीं था। समाज से पहले उन्हें अपने घर में ही कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन, प्रतिभा ने न सिर्फ अपने सपने पूरे किए बल्कि 1200 से ज्यादा किसानों को अपने प्रोडक्ट लोगों तक पहुंचाने के लिए प्लेटफॉर्म भी दिया।

साल 2016 में प्रतिभा ने सात किसानों के साथ 'भूमिशा ऑर्गेनिक्स' की शुरुआत की। अपने इस प्लेटफॉर्म के बारे में प्रतिभा बताती हैं, 'ऑगेनिक खेती सुनते ही हर किसी को महंगे–महंगे प्रोडक्ट नजर आने लगते हैं। हम अपने प्लेटफॉर्म के जरिए हर वर्ग के लोगों तक किफायती प्रोडक्ट पहुंचाना चाहते थे। इसलिए हमने छोटे– छोटे किसानों को जोड़ कर उन्हें बीज से लेकर ऑर्गेनिक खेती और मार्केटिंग में मदद की। हम उन्हें डिमांड के हिसाब से फसल उगाने की सलाह देते हैं जिससे उन्हें ज्यादा फायदा हो सके।'

तीन कैटेगरी में बिक रहे हैं 70 से ज्यादा प्रोडक्ट

इनमें दलहन, तेल, मसाले, जड़ी–बूटियां (हर्ब्स), काले गेहूं, अलसी, क्विनोआ जैसे 70 से ज्यादा रॉ प्रोडक्ट और कैंडी, अचार, मुरब्बा जैसे 23 प्रोसेस्ड प्रोडक्ट हैं। इन्हें तीन कैटेगरी में बांटा गया है ताकि कस्टमर अपनी जरूरत के हिसाब से प्रोडक्ट ले सकें।

पहला ऑर्गेनिक सर्टिफाइड, ये उन किसानों से लिए जाते हैं जिनके पास ऑर्गेनिक खेती का सर्टिफिकेट है।

दूसरा केमिकल फ्री, ये प्रोडक्ट उन किसानों से लिए जाते है जो ऑर्गेनिक खेती तो कर रहे हैं लेकिन उनके पास सर्टिफिकेट नहीं है।

तीसरी और आखिरी कैटेगरी है नैचुरल। इसमें उन किसानों के प्रोडक्ट शामिल है जो सालों से नैचुरल तरीकों से खेती कर रहे हैं, लेकिन उनके पास ऑर्गेनिक खेती का सर्टिफिकेट नहीं है।

यहां है सोने की स्याही से संस्कृत में लिखी गई भगवद्गीता

यहां सोने की स्याही से संस्कृत में लिखित भगवद्गीता है तो 12वी सदी के आरंभ में लिखा गया दुर्लभ नारायण विलास ग्रंथ भी। इसमें लंका के राजवैध सुषेण और पांडवों के भाई नकुल, जो योद्धा हाने के साथ चिकित्सक भी थे, दोनों के चिकित्सा सूत्रों को संहिताबद्ध किया गया है। यह ग्रंथ रामायण और महाभारत कालीन दो युगों की उपचार पद्धति का प्रतिनिधित्व करता है। इतना ही नहीं यहां देश की प्राचीनतम सभ्यताओं के अवशेषों के साथ सदियों पुरानी अति दुर्लभ 3380 पांडुलिपियों और ग्रंथों का अनूठा संग्रह है। ये संग्रह जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू–बी विश्विद्यालय में 2014 में स्थापित साहित्य संस्थान संग्रहालय में संरक्षित है।

डिजिटलाइजेशन व यूमिगेशन से सहेजा है ग्रंथों को– विश्वविद्यालय ने कई वर्षो तक कठिन परिश्रम कर प्राचीनत्तम सभ्यताओं के अवशेषों से सामग्री का संकलन किया है। इसके तहत वैदिक ज्ञान–विज्ञान पर आधारित दुर्लभ पांडुलिपियों, अति प्राचीन दुर्लभ ग्रंथों को यूमिगेशन चेम्बर और डिजिटलाइजेशन के जरिए हमेशा के लिए सुरक्षित किया गया है ताकी भावी पीढ़ियां वैदिक ज्ञान, विज्ञान के महत्व, भारतीय भाषाओं की समृद्धता व प्राचीन सभ्यताओं का सुगमता से अध्ययन कर सके।

कर्नल टॉड भवन : जहां लिखा गया था राजस्थान का इतिहास

विद्यापीठ वह जगह भी है, जहां कर्नल टॉड ने चार (1818 ये 1882) बैठकर इतिहास लिखा था। डबोक स्थित उस भवन को कर्नल टॉड भवन के नाम से ही जाना जाता है। यह भवन आज भी किसी धरोहर से कम नहीं है। इसके अलावा विद्यापीठ के संग्रहालय में विभिन्न जगहों की खुदाई में मिले देश की हजारों साल पुरानी प्राचीन सभ्यताओं के औजार, मिट्टी के बर्तन, हाथी के दांत, टेराकोटा की चुड़ियां, तीर, रॉक कला के चित्र आदि है जो मानव समाज के विकास की कहानी कह रहे हैं।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सांजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपयें)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करें उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

भक्ति जगत् में दो वाक्यांश प्रचलित हैं। एक है–हरिकृपा और दूसरा है हरि इच्छा। यदि अपने अनुकूल कोई कार्य संपादित हो गया तो हरिकृपा। यदि कोई कार्य अपने मनानुसार नहीं हो पाया तो हरि इच्छा। यानी जो कुछ भी हुआ वह केवल मेरे प्रयास से संभव न था। प्रयास तो हरेक व्यक्ति करता ही है पर सफलता हरेक को कहाँ मिलती है, इसलिये जब तक हरिकृपा नहीं होगी तब तक कार्य हो पाना असंभव है। श्रेय मेरा नहीं हरि का है। मैं तो केवल चाहने वाला या करने वाला हूँ, कराने वाला तो हरि ही है।

ठीक वैसे ही कोई कार्य मेरे अनुसार नहीं हो पाया तो उसमें हरि की इच्छा रही होगी, क्योंकि हो सकता है यह समय उस कार्य की सिद्धि के लिये ठीक नहीं होगा। मैंने तो चाहा व किया पर वह उचित था कि नहीं, अभी आवश्यक था या नहीं ? यह तो हरि ही जानता है। इसलिये नहीं हो पाया तो मैं क्यों मन में मलाल रखूं। हरि इच्छा थी कि यह कार्य अभी इस रूप में न हो। ये दोनों सूत्र अहंकार और विषाद दोनों आवेगों को नियंत्रित करने के रामबाण सूत्र हैं। इन्हें अपनाने वाला सदा प्रसन्न व निर्भार रहता है।

कुछ काव्यमय

सत्संग का साबुन
अंतस् के मैल से
मुक्त कर देता है।
निर्मल मन वाला ही
परमात्मा के दिल में
प्रवेश लेता है।
पावन करने हो,
हमारे बाह्य व अंतर अंग।
तो भगीरथ प्रयास है,
नियमित सत्संग।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सर्व मंगल मांगल्यै

संसार में कुशल समाचार जानने के लिये एक दिन भगवान ने नारद जी को पृथ्वी पर भेजा। उन्हें सबसे पहले एक दीन–दरिद्र पुरुष मिला जो अन्न और वस्त्र के लिये तड़प रहा था। नारद जी को उसने पहचाना और अपनी कष्ट कथा रो–रो कर सुनाने लगा। उसने कहा, जब आप भगवान से मिले तो मेरे गुजारे का प्रबन्ध करवा लेवे। नारद जी भी उसका दुःख देखकर दुःखी हुए बिना नहीं रहे, उदास मन से उन्होंने वहाँ वे विदाई ली और ऐसा आश्वासन दिया कि मैं प्रभु से अवश्य बात करूंगा। तुम्हारे लिये।

एक गाँव में नारद जी की भेंट एक धनाढ्य पुरुष से हुई। उन्होंने भी नारद जी को पहचानने में देर नहीं की पर उनका उलाहना कुछ और ही था। नारद जी ने उनस कुशलक्षेम पूछा तो उस धनवान न खिन्न होकर कहा मुझे भगवान ने कैसे झंझाल में फँसा दिया। थोड़ा मिलता तो मैं शान्ति से रहता और कुछ भजन कर पाता, पर इतनी दौलत तो संभाले नहीं संभलती। ईश्वर से मेरी प्रार्थना करना कि मुझे इस झंझाल से मुक्ति दें। नारद जी को यह विषमता अखरी और पुनः स्वर्गलोक की ओर प्रस्थान कर गए। भगवान ने नारद जी

को उस यात्रा का वृत्तान्त पूछा तो देवर्षि ने दोनों घटनाएँ सुना दी। नारायण हंसे और बोले देवर्षि मैं कर्म के अनुसार ही किसी को कुछ दे सकने में विवश हूँ। जिसकी कर्मठता समाप्त हो चुकी है उसे मैं कहाँ से दूँ। तुम अगली बार जाओ तो उस दीन–हीन से कहना कि दरिद्रता के विरुद्ध लड़े और साधन जुटाने का प्रयत्न करें तभी उसे दैविक सहायता मिल सकेगी। कहा भी है :

उद्यमेव ही सिद्यन्ति,
कार्याणि न मनोरथे
न ही सुप्तस्य
सिंहस्य प्रनिशन्ति,
मुखे मृगाः।।

इस प्रकार से धनी महानुभाव से कहना यह दौलत तुझे दूसरों की सहायता के लिये दी गई है। यदि तू संग्रही बना रहा तो झंझाल ही नहीं आगे चलकर वह विपत्ति भी बन जायेगी। इसे तुम स्वयं कम कर सकते हो, इसका सात्विक सदुपयोग करके। असहाय, बीमारों, दुखियों, दरिद्रों एवं निराश्रितों की सेवा में इसे लगाना ही इसका सर्वोत्तम उपयोग है।

क्या हम भी ऐसे झंझाल में फंसे हुए तो नहीं हैं ? क्या हमें रातों की नींद बराबर आ रही है ? क्या हम धन के मात्र चौकीदार बनकर रह गए हैं? क्या हमारे मन की स्थिति भी उस धन महानुभाव के सदृष्य हैं यदि हाँ तो यही है अवसर जागने का, यहीं है अवसर पुण्य कमाने का, यह समय है अपनी धनरूपि लालसा को सम्मानित करने का। अपनी आवश्यकता से अधिक संचित पूँजी को दे डालिये, दिव्यांगों, निराश्रितों, बीमारों, विधवाओं एवं असहायों की सेवा में। आपकी पूँजी मात्र तिजोरी में बंद रह गई है तो किसी के काम नहीं आएगी। और यदि इसका सेवा में उपयोग हो गया तो विकलांग भी अपने पाँवों पर चल कर निराश्रित बाल गोपाल भी समाज में अपना स्थान बना लेंगें, मौत से झुझता हुआ गरीब बीमार भी स्वस्थ होकर आपके कल्याण और सर्वसुख की मंगल कामना प्रभु से करेगा।

–कैलाश 'मानव'

दयालु

दुनिया में अधिकांश लोग 'जैसे को तैसा' की रीति पर चलते हैं। वे नफरत का जवाब नफरत से और बुराई का बदला बुराई से देते हैं, परन्तु प्र.ति इस फितरत का पालन नहीं करती। वह इंसान द्वारा किए गए हर कु.त्य का बदला अच्छाई से ही देती है। हमें भी इस प्र.ति से सीखना होगा कि कैसे किसी की बुराई का बदला हम भलाई से कर सकते हैं?

एक राजा विश्राम करने के लिए अपने आम के बगीचे में गए और एक बड़े से आम के पेड़ के नीचे घास पर लेट गए। उधर से एक किसान गुजर रहा था, जिसने बहुत दिनों से कुछ खाया नहीं था। वह किसान और उसका परिवार भूखा था। उसने मन में सोचा कि मुझे भले ही खाने को ना मिले, लेकिन मेरे परिवार को कुछ ऐसा मिल जाए, जिससे उसका पेट भर जाए। इसी विचार में उसकी नजर आम के वृक्ष पर गई, जिस पर ढेर सारे आम लगे हुए थे। किसान बगीचे में गया। उसके मन में परिवार की भूख का विचार आया और उसने एक पत्थर उठाया और पेड़ पर दे मारा, परन्तु बदकिस्मती से वह पत्थर आम पर तो नहीं लगा, लेकिन पेड़ के नीचे सोए राजा के सिर पर जा लगा और राजा के सिर से लहू बहने लगा। राजा के जोर से कराहने की आवाज सुनकर बगीचे में उपस्थित सैनिक और दरबारी वहाँ आ गए और किसान को बुरी तरह घसीटते हुए सीधा कारागृह में डाल दिया और उससे कहा, "कल तो तुम्हें निश्चित ही सजा मिलेगी। राजा अवश्य ही तुम्हें मृत्युदण्ड देंगे। तुम सजा के हकदार हो। तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारे पत्थर से किसे चोट लगी?" दूसरे दिन उस किसान को राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने किसान से पूछा–बताओ, तुमने मुझे पत्थर क्यों मारा?

इस पर किसान ने हाथ जोड़कर सकुचाते हुए दुःखी मन से अपनी व अपने परिवार की भूख की व्यथा सुनाई और उत्तर दिया– मैंने तो आम पाने के लिए पेड़ पर पत्थर मारा था, अगर पत्थर पेड़ पर लग जाता तो मुझे पेड़ से आम मिल जाता। मेरा उद्देश्य आपको पत्थर मारना नहीं था, यह तो दुर्भाग्यवश आपको लग गया और आपके सिर से लहू बहने लगा। वह रोते–गिड़गिड़ाते हुए राजा से क्षमा की याचना करने लगा कि हे राजा ! मुझे क्षमा कर दीजिए मुझसे गलती हो गई। राजा ने मन ही मन सोचा कि निर्जीव पेड़, जिसमें सोचने–समझने की क्षमता नहीं होती, उसे पत्थर मारने पर वह फल देता है, तो फिर मैं तो एक विवेकी व्यक्ति हूँ। मैं इस किसान को क्या दे सकता हूँ और तो और इस किसान का उद्देश्य मुझे मारना भी नहीं था। राजा ने इस विचार के साथ किसान को न केवल क्षमा कर दिया, बल्कि भविष्य में उसे ऐसा कार्य न करना पड़े, इस हेतु किसान के घर पर एक वर्ष तक का अनाज रखवा दिया, जिससे किसान और उसके परिवार का पेट भर जाए।

आज के इस कलयुगी समय में जहाँ इंसान, इंसान के खून का प्यासा बना हुआ है, एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी का दुश्मन बना हुआ है, एक देश दूसरे देश की जमीन पर कब्जा करने के लिए युद्ध पर उतारू है और हर व्यक्ति बदले की आग में जल रहा है, ऐसे समय में हर व्यक्ति का कर्त्तव्य बनता है कि वह भी राजा की भाँति दयालु बने, जो उसके ऊपर किए गए प्रहार का बदला परोपकार से देता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

फोन क्या आया राजमल भाईसा की रातों की नींद उड़ गई। मफत काका ने जवाब देने की कोई तिथि तय नहीं की थी इसलिये जल्दी भी नहीं थी। इसी उहापोह में थे कि उन्हें कैलाश की याद आई और आशा की एक किरण दिखाई दी।

उन्होंने तुरन्त कैलाश को एक पोस्टकार्ड लिख सारी बात बताई। कैलाश को ज्यूं ही पत्र मिला, उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं था। वह यह सोच सोच कर ही हैरान था कि देश में ऐसे भी लोग हैं जो शक्कर व तेल की ट्रकें निःशुल्क वितरित करते हैं। एक ही पल में उसने ट्रकें खाली कराने, गेहूं इकट्ठा करने और आदिवासियों में वितरित करने का सपना देख लिया। उसकी आंखों के सामने, भूखे–नंगे गरीबों के मुस्कराते चेहरे नाच उठे जो सत्तू खा कर मुदित हो रहे थे। उसने आव देखा न ताव, लौटती डाक से ही भाईसा को पोस्टकार्ड डाल लिख दिया कि आप हां कर दो, मैं 5 दिनों की छुट्टियां लेकर आपके पास आ रहा हूं।

भाईसा को जब कैलाश का पत्र मिला तो उनका उत्साह भी द्विगुणित हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि सेवा के कार्य में उनका हाथ बंटाने उन्हें एक सशक्त कन्धा मिल गया है। उन्होंने तुरन्त मफत काका को फोन लगाया और हां कर दी।

इस बीच कैलाश छुट्टियां लेकर पाली से जवाई बांध रवाना हुआ। पूरे मार्ग में यही सोचता रहा कि भाईसा को तो हां कर दी है मगर इतना भारी कार्य पूर्ण कैसे होगा? तरह तरह की योजनाएं उसके मन में जन्म ले रही थी।

अंश - 44

किडनी में पथरी तो नमक कम खाएं छाछ और पानी ज्यादा पीएं

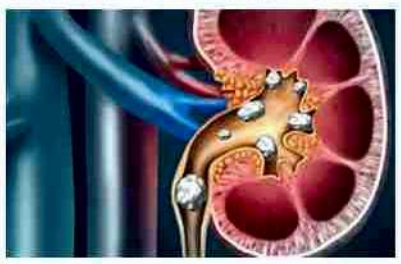

शरीर में स्टोन पथरी) कई जगह बनते हैं। इनमें ज्यादातर यूरिनरी ट्रैक व पित्त की थैली वाले होते हैं। इनमें भी सबसे अधिक यूरिनरी स्टोन होते हैं। यूरिनरी स्टोन मुख्य रूप से चार जगह होते हैं। पहला किडनी में, दूसरा किडनी से जुड़ी नली में, तीसरा पेशाब की थैली में (ब्लेडर) और चौथा पेशाब की नली (यूरेथ्रा) में होते हैं।

पथरी होने पर तेज दर्द होता है। लेकिन किडनी में स्टोन है और रूकावट नहीं करता है तो दर्द धीमा होता है। यह दर्द कमर के पास बगल (फ्लैंक) में होता है। साथ ही यूरिन में रूकावट व जलन, अगर पथरी से अंदर चोट पहुंच रही है तो यूरिन में खून भी आ सकता है।

जांचें

पहले क्लीनिक हिस्ट्री से पता चला जाता है। साइज जानने के लिए एक्सरे व सोनोग्राफी जरूरी है। पथरी की पुष्टि होने पर किडनी की स्थिति जानने के लिए ब्लड टेस्ट भी करवाते हैं।

कारण

80 प्रतिशत पथरी कम पानी पीने से बनती है। जो लोग कम पानी पीते हैं और बीज वाली चीजें ज्यादा खाते हैं उनमें आशंका ज्यादा रहती है। नमक पांच ग्राम से ज्यादा खाने, गुर्दे नली की बनावट में गड़बड़ी और हाइपर मेटाबॉलिज्म भी पथरी बनने के कारण है।

सर्जरी कब है जरूरी

पथरी 5–6 एमएम तक की है तो दवा–परहेज से निकल जाती है। इससे बड़ी है तो सर्जरी की जरूरत पड़ती है। अगर छोटी पथरी कहीं फंसी है तो सर्जरी की जरूरत अनिवार्य है। लेजर से बिना चीरे की भी सर्जरी संभव है।

इनका रखें ध्यान

बचाव के लिए हरी मौसमी सब्जियां–फल अधिक खाएं। अगर कोई दिन में आठ बार से कम यूरिन जाता है या फिर किसी का यूरिन अगर पीला या भूरा आ रहा है तो पानी कम पी रहे हैं। खूब पानी पीएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।

पाली का अच्छा जीवन। कमला जी पधारी, कमला जी मार्केट में गयी। दुकानों पर कहा मैं सिलाई का काम जानती हूँ। आप सिलाई का काम दीजिए। आपकी रेड़िमेड कपड़े की दुकान कर लीजिए। एक दुकान वाले जैन साहब गद्दे मखमल के उसमें रुई भरी हुई। छोटे –छोटे तकिये, बच्चों के बिस्तर, ओढ़ने का बहुत सुन्दर। ये लीजिए कमला जी अच्छा ठीक हैं। आपके पतिदेव पोस्ट ऑफिस में है– बढ़िया। अग्रवाल साहब को हमारा नमस्कार कहना।

ये ले जाओ मखमल 20 फीट मखमल दिया रजाई सिल दो बच्चों की। इस तरह के तकिये सिल दो कमला जी खुश हुए। एक सिलाई मशीन पहले तो हाथ की खरीदी। हाथ की सिलाई मशीन से रात को 1–1 बजे तक काम करती। खूब बिजी रहती। छोटा–सा रसोई घर एक दाल या एक सब्जी और रोटी कभी नहीं सोचा दाल है तो सब्जी भी होनी चाहिए कहाँ से लावे ऐसा।

208 रुपये महिना मिलता था– महाराज! 50 रुपये गिरिराज जी जैन साहब भीलवाड़ा में दुकान थी उनसे तीन हजार रुपये उधार लिए थे। डेढ़ हजार चुका दिये थे, डेढ़ हजार बाकी थे। पच्चास रुपये महिने की किस्त की थी, 30 महिने तक 50 रुपये महिना भेजेंगे। 1500 रुपये चुक जायेगा 50 रुपये उनको भेजते 25 या 30 रुपया बापूजी को मनीआर्डर करते। साल में 9–10 महिने ही कर पाते 12 महिने पूरे नहीं कर पाते। तो 208 में से 75 गये 133 रुपये बचे। घर –गुजारा अच्छा हो जाता। 100–150 रुपये कमला जी कमा लेती। जीवन अच्छा था।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 171 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023